तुलसी बहुउद्देशिय शिक्षण संस्था, तुमसर व्दारा संचालित

कला - वाणिज्य डिग्री कॉलेज पेट्रोल पंप जवाहरनगर (भंडारा)

U.G.C. पुरस्कृत

महात्मा गांधी अभ्यास केंद्र

जन जागृती अभियान - दिनांक :

स्वामी विवेकानंद - एक युग पुरुष

स्वामी विवेकानंद, विश्वपुरुष का जन्मदिन प्रति वर्ष १२ जनवरी को युवा दिवस के रुप में मनाते है। इस युगपुरुष की मृत्यु ३९ वे साल में जुलाई १९०२ में हुई , उनके जिवन के ३९ साल युगो को प्रेरणा देते रहेंगे, ऐसा जिवन स्वामीजी ने विश्व के लिए जिया। अपने गुरु के आज्ञानुसार उन्होने सारा भारत भ्रमण किया और वैसे ही विश्व भ्रमण कर धर्म और विश्व में भारत का सिक्का जमाया व धार्मिकता की पहचान से विश्व को अवगत करवाया.

स्वामीजी भारत के ऐसे पहले संत थे जिन्होने अमेरिका के शिकागो शहर में हो रहे विश्व धर्म संमेलन में हिस्सा लिया और अपने अपने व्यख्यान से सबका हृदय जित लिया. उनके प्रेरक प्रवचनों से युवा पिढी में उल्लास भर गया. इसी वजह से उस वक्त अमेरिका के शिकागो में रामकृष्ण मिशन का कार्य बडी ही अच्छी तरह से किया गया और आज भी इन शाखायों व्दारा भारतियों को अपने मातृभुमी प्रती प्रेम की विचारधारा से परिपूर्ण किया जा रहा है.

स्वामीजी जब १८ वर्ष के आयु के थे वह कलकत्ता के कॉलेज में पढा करते इस दौरान उनका परिचय उनके गुरु श्री रामकृष्ण परमहंस से हुआ इसी दौरान उन्होने गुरु से बढी ही हिम्मत कर पुछा की क्या आपने ईश्वर के दर्शन किये है ? विवेकानंद रामकृष्ण के सभी अनुयायी में लोकप्रिय व अव्वल स्थान पर थे रामकृष्ण व उनकी पत्नी शारदादेवी के तो भक्त थे रामकृष्ण का संदेश जगभर पहुचाने हेतू उन्होने रामकृष्ण मिशन की स्थापणा की यह मिशन आजभी विश्वभर देशप्रेम, धार्मिकता शांती का प्रसार कर रहा है। प्रगतिशील भारत की पगती में स्वामीजी का योगदान बहुमुल्य है। जब स्वामीजी जापान से शिकागो कि यात्रा में थे उनके दौरान स्वामीजी की भेट जमशेटजी टाटा से हुई और इस मुलाकात के दौरान स्वामीजी ने जमशेटजी टाटा को विज्ञान और आने वाले भविष्य में उनके उपयोगिता को गंभीरता से समझाया. विवेकानंद से प्रेरणा पाकर जमशेटजी टाटा ने कुछ वर्ष पश्चात इंडीयन इंस्टीटयुट ऑफ सायंस की स्थापणा की और जमशेटजी ने विवेकानंदजी से कहा की, इस संस्था का कार्यभार संभाले. पर स्वामीजी ने तो अपना जीवन विश्व कल्याण के लिये समर्पित कर दिया था, उन्होने इस प्रस्ताव को ठूकराया व जमशेटजी के इस कार्य की प्रशंशा की. आज हम सभी जानते है की टाटा विश्व व भारत की सबसे बडी कंपनी है. विवेकांनदजी के ही वो विचार थे जिन्होने लोगो को आत्मनिर्भर बनवाया व भारत के आझादी में लोगो में देशप्रेम जागृत किया.

रामकृष्ण के मिशन को पूरा करने के लिये उन्होने काश्मीर से कन्याकुमारी तक पैदल यात्रा की जिनमें उन्हे भुखा रहना पडा. कुछ भी खा-पीकर तो कभी भुखा रहकर अपना लक्ष पुरा करना पडा. इसी दौरान उन्होने जीवन का संघर्ष व भारतीयों के दारिद्र अनूभव किया. स्वामीजी ने बहुत ही दु:खी होकर स्वयं की प्रगती स्वयं करने की प्रेरणा लोगो को दी. जब वो कन्याकुमारी पहुँचे तब कन्याकुमारी देवी के दर्शन कर २५, २६ और २७ डिसेंबर १८९२ में भारत भारत के त्रिवणी संगम में ध्यान किया. क्या इस तरह का कार्य एक आम आदमी कर सकता है?आज इस घटना को १२२ साल पूरे हो चूके है. इसलिये हर एक भारतीय का कर्तव्य है कि स्वामी विवेकानंद की स्मृती की जाये व उनके प्रेरणादायी विचारों से देश को आगे बढाये. भेट देते है। स्वामीजी के एक सेवक एकनाथजी रानडे ने इस मेमोरीयल बनवाने में जो योगदान दिया वो काबिले तारीफ है. कितनी कठीन परिस्थितीयों में यह रॉक मेमोरीयल बनाया वह भारतिय एकात्मता का उदाहरण स्थापित किया हम जैसे सभी भारतीयों की जिम्मेदारी है कि अपने बच्चो की व आने वाली पिढी को व स्वयं भी कन्याकुमारी, तामिलनाडू व बेल्लूर मट, कलकत्ता पश्चिम बंगाल स्वामीजी को जानने व अनूभव प्राप्त करने हेतू जरुर भेट दे व स्वामीजी का देशप्रेम व धार्मिकता व गरीबों के प्रति उनका स्नेह का संदेश जिनमें उन्होने कहा की ''ईश्वर एक है.'' सभी धर्मो को मानकर हमें हर रुप में मिलने वाले ईश्वर के प्रती समर्पित रह कर मानव कल्याण के लिए तत्पर रहना है.

कार्यक्रम स्थान : ग्रामपंचायत कार्यालय, ...

समय : दोपहर २ बजे

सौजन्य

डॉ. जी. डी. टेंभरे
सचिव, तु.ब.शि.सं.तुमसर
पूर्व सदस्य-विव्दत परिषद रा.तु.म. नागपूर विद्यापीठ

डॉ. आर. डी. पटले
समन्वयक
म. गांधी अभ्यासकेंद्र

डॉ. ए. एस. मोहबन्शी
प्राचार्य
कला व वाणिज्य महा. पे. पं., जवाहरनगर

तुलसी बहुउद्देशिय शिक्षण संस्था, तुमसर व्दारा संचालित

कला - वाणिज्य डिग्री कॉलेज पेट्रोल पंप जवाहरनगर (भंडारा)

महात्मा गांधी अभ्यास केंद्र

पहला भाग

बापू का यशस्वी जीवन

२ अक्तूबर १८६९	:	सुदाम पूरी (पोरबंदर) में श्री करमचंद गांधी के घर जन्म हुआ।
सन १८८३	:	१३ वर्षिय गांधी का कस्तूरबा बाई के साथ विवाह हुआ।
सन १८८७	:	राजकोट के काठियावाडा हाई स्कूल में मैट्रीक्युलेशन परीक्षा पास की और भावनगर जाकर सामलदास कॉलेज में भरती हुए।
४ सितंबर १८८८	:	जातिवालो के घोर विरोध की उपेक्षा कर कानूनी शिक्षार्थ ईग्लैन्ड को प्रस्थान।
१२ जुन १८९१	:	बैरिस्टरी कर परीक्षा प्राप्त कर भारत को प्रस्थान
अप्रैल १८९३	:	पोरबंदर की एक मुस्लिम कम्पनी का काम स्विकार कर दक्षिण अफ्रिका के लिए प्रस्थान।
सन १८९३-९५	:	दक्षिण अफ्रिका में भारतीयो के प्रती दिखाई जाने वाली उपेक्षा का अध्ययन। स्वयं कई बार उपेक्षित और अपमानित, किन्तु शांत, प्रतिशोध की भावना का दमन। भारतीयों की समस्याओं में बढती हुई रुची नैटाल में वकालत आरंभ।
२२ में १८९४	:	नैटाल से तारु व्दारा बुलाये जाने के कारण अपनी पत्नी और दो बच्चो के साथ दक्षिण अफ्रिका के लिए दूसरी बार प्रस्थान।
सन १८९७ - ९८	:	नैटाल में गांधीजी पर यूरोपियनो का आक्रमण, ईट पत्थर से चोट, फिर भी प्रतीकार की भावना का शमन।
सन १८९९	:	बोअर युध्द में घयलो की सेवा के लिए सेवा समिती की स्थापना।
नबम्बर १९०१	:	दक्षिण अफ्रिका से भारत वापस।
सन १९०२	:	देश - पर्यटन, रेल की तिसरी श्रेणी में यात्रा।
१ जनवरी १९०३	:	दक्षिण अफ्रिका से फिर बुलावा। प्रिटोरीया पहुँचे।
अप्रैल १९०३	:	ट्रासंवाल की बडी कचहरी में नियमित रुप से वकालत आरम्भ। वहां ब्रिटीश इंडीयन असोसियेशन की स्थापना।
सन १९०४	:	अंग्रजी, तामिल, गुजराती और हिन्दी में प्रकाशित होने वाले ''इंडियन ओपिनियन'' का सम्पादन ग्रहण।
सन १९०६	:	३७ वर्ष की आयु में आमरण ब्रम्हचर्य का संकल्प। कस्तूरबा व्दारा पूज्य पतिदेव के संकल्प का समर्थन।
सन १९०७	:	भारतीय - प्रवास संबंधी कानून के विरोधी में सत्याग्रह आंदोलन आरंभ।
१० जानेवारी १९०८	:	एक वीर सत्याग्रही के रुप में पहली बार दो मास कारावास का दंड।

कृपया पिछे देखीं

अगस्त १९२० : केसरे हिन्द स्वर्ण पदक का परित्याग।
नबम्बर १९२० : महात्मा गांधी के करकमलो से गुजरात विद्यापीठ की स्थापना।
१६ अगस्त १९२१ : महात्माजी ने कमीज और टोपी का परित्याग करके केवल लंगोटी पहनने का निश्चय किया।
१० मार्च १९२२ : यंग इंडिया में तीन राजव्देषात्मक लेख्र लिख्राने के लिए गिरफ्तार।
१९ मार्च १९२२ : ६ वर्ष के कारावास का दंड इसी वर्ष कारावास में रहते हुए महात्मा गांधी ने अपनी आत्मकथा गुजराती में लिख्राना आरंभ किया।
दिसम्बर १९२३ : हिदुस्थान सेवा दल की स्थापना।
५फरवरी १९२४ : अस्वस्थ होने के कारण बिना शर्त रिहाई।
१८ सितंबर १९२४ : कोहाट के सांप्रदाईक दंगे के प्रयश्चित के लिए २१ दिन का अपवास आरंभ।
दिसंबर १९२४ : बेलगांव में प्रथम बार कॉग्रेस के सभापति।
१३ मार्च १९३० : डांडी के लिए ऐतिहासिक कूच।
६ अप्रेल १९३० : डांडी में नमक बनाकर सरकारी कानून भंग किया।
६ मे १९३० : रात को गिरफ्तार किये गये।
२५ जानेवारी १९३१: इरविन घोषणा। गांधीजी और ३० अन्य नेता रिहा।
४ मार्च १९३१ : गांधी इरविन पैक्ट
२७ अगस्त १९३१ : गोलमेज परिषद में भाग लेने के लिये इंग्लंड प्रस्थान।
४ ज्ञानेवारी १९३२ : सत्याग्रह पुन: आरंभ। कॉग्रेसी संस्थायों पर प्रतिबंध। गांधीजी गिरफ्तार।
२० सितंबर १९३२ : दलितवर्ग में पृथक चुनाव की घोषणा के विरोध में येरवाडा जेल में ऐतिहासिक आमरण उपोषण आरंभ।
२६ सितंबर १९३२ : सरकारी विज्ञप्ति से संतोष होने के कारण उपवास तोडा।
फरवरी १९३३ : हरिजन सेवक संघ की स्थापना और साप्ताहिक हरिजन का प्रकाशन आरंभ।
८ मई १९३३ : आत्म शुध्दी के लिए २१ दिन का उपवास। उसी दिन जेल से रिहा।
१९ मे १९३३ : पर्णकुटी पूना में उपवास सफलतापूर्वक समाप्त।
अक्तूबर १९३४ : कॉग्रेस सदस्यता का परित्याग।
अप्रेल १९३५ : इन्दोर में हिंदी साहित्य सभापतित्व और हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने की अपील।
जुलाई १९३९ : एक पत्र में हिटलर से युध्द न करने की अपील।
११ अक्तूबर १९४० : व्यक्तीगत सत्याग्रह का सुत्रपात।
२७ मार्च १९४२ : दिल्ली में सर स्टेफर्ड क्रिप्स से भेट।

कार्यक्रम स्थान : ग्रामपंचायत कार्यालय, ...
समय : दोपहर २ बजे

सौजन्य

डॉ. जी. डी. टेंभरे
सचिव, तु.ब.शि.सं.तुमसर
पूर्व सदस्य-विव्दत परिषद रा.तु.म. नागपूर विद्यापीठ

डॉ. आर. टी. पटले
समन्वयक
म. गांधी अभ्यासकेंद्र

डॉ. ए. एस. मोहबन्शी
प्राचार्य
कला व वाणिज्य महा. पे. पं., जवाहरनगर